ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
January-June 2026 2(1)
https://shodhvichar.com/

Original Article

DOCUMENTARY PROCESS OF SOLAR ENERGY-BASED TRADITIONAL SALT PRODUCTION IN THE AGARIYA COMMUNITY: A CASE STUDY

अगरिया समुदाय में सौर ऊर्जा आधारित पारंपरिक नमक निर्माण की डॉक्यूमेंट्री प्रक्रिया: एक केस स्टडी

Sandesh Mahajan [1*], **Pradeep Mallik** [2]
[1] Head of Department, Mass Communication, Pandit Deendayal Energy University, Gandhinagar, India
[2] Professor, Department of Mass Communication, Pandit Deendayal Energy University, Gandhinagar, India

ABSTRACT

English: This research paper examines the documentary filmmaking process undertaken to explore the technological transformation in the livelihood, social structure, and culture of the Agariya community engaged in traditional salt production in the Little Rann of Kutch, Gujarat. Since 2017, the Agariyas have increasingly shifted from diesel-powered pumps to solar-powered systems, substantially reducing production costs and contributing to improvements in socio-economic conditions, education, and women's empowerment within the community.

Using this film as a documentary case study, the paper focuses on how key creative and methodological decisions such as topic selection, field research and interviews, narrative construction, and cinematographic choices are negotiated when working with sensitive and complex social realities. The documentary is approached not merely as an audio-visual text, but as a research methodology that generates situated, practice-based knowledge.

By reflecting on the experiences, challenges, and ethical considerations encountered during the filmmaking process, the study highlights both the lived conditions of the Agariyas and the analytical potential of audiovisual research for engaging with marginalized communities. The research emerges from an Indian Council of Social Science Research (ICSSR)-funded project titled "Impact of Solarization on Traditional Salt Production: A Case Study of the Agariya Community in the Little Rann of Kutch."

Hindi: यह शोध-पत्र गुजरात के कच्छ के छोटे रण में पारंपरिक नमक निर्माण में लगे अगरिया समुदाय की आजीविका, सामाजिक ढांचे और संस्कृति में आए महत्वपूर्ण तकनीकी बदलावों का डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से प्रलेखन करता है। हाल के वर्षों में, विशेष तौर पर 2017 के पश्चात, अगरिया समुदाय ने महंगे डीजल पंपों को छोड़कर सौर ऊर्जा आधारित पंपों को अपनाया है, जिससे उनकी उत्पादन लागत में एक-तिहाई की कमी, सामाजिक-आर्थिक जीवन में उत्साहजनक सुधार, और विशेष तौर पर शिक्षा एवं महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रगति देखने को मिली है।

इस केस स्टडी का उद्देश्य मीडिया, दृश्य नृवंशविज्ञान और सांस्कृतिक अध्ययन के शोधार्थियों को यह समझाना है कि जब कोई संवेदनशील और जटिल सामाजिक विषय चुना जाता है तो डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रक्रिया में विषय चयन, फील्ड रिसर्च व साक्षात्कार, कथा-विकास, दृश्यांकन इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण निर्णय किस प्रकार लिए जाते हैं। इस शोध-पत्र का केंद्र इस बदलाव का डॉक्यूमेंट्री केस स्टडी के रूप में विश्लेषण करना है। यहाँ डॉक्यूमेंट्री केवल दृश्य-श्रव्य कथन का माध्यम नहीं,

*Corresponding Author:
Email address: Sandesh Mahajan (sandesh.mahajan@sls.pdpu.ac.in), Pradeep Mallik (pradeep.mallik@sls.pdpu.ac.in)

Received: 08 January 2025; **Accepted:** 13 February 2026; **Published** 05 March 2026
DOI: 10.29121/ShodhVichar.v2.i1.2026.72
Page Number: 28-34
Journal Title: ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
Journal Abbreviation: ShodhVichar J. Media & Mass Commun.
Online ISSN: 3107-6408
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This work was supported by the Indian Council of Social Science Research (ICSSR) under a grant for the project 'Effect of Solarisation of Traditional Salt Manufacturing — A Case Study of the Agariya Community of Little Rann of Kutch through Audio-Visual Documentation,' hosted at Pandit Deendayal Energy University (PDEU), Gandhinagar.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

बल्कि एक शोध पद्धति के रूप में प्रयुक्त हुई है। फिल्म निर्माण के दौरान सामने आए अनुभव, चुनौतियाँ और संभावनाएँ न केवल समुदाय की जीवन परिस्थितियों को उजागर करती हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि हाशिये पर खड़े समुदायों को समझने के लिए ऑडियो-विजुअल शोध कितना कारगर हो सकता है।
यह शोध भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) द्वारा प्रदत्त अनुसंधान परियोजना “पारंपरिक नमक उत्पादन के सौरकरण का प्रभाव: कच्छ के लिटिल रण के अगरिया समुदाय का एक केस स्टडी” के अंतर्गत किया गया है।
फिल्म निर्माण प्रक्रिया के दौरान सामने आए अनुभवों, चुनौतियों और नैतिक विचारों पर विचार करते हुए, यह अध्ययन अगरिया समुदाय की वास्तविक परिस्थितियों और हाशिए पर पड़े समुदायों के साथ जुड़ने के लिए ऑडियो-विजुअल अनुसंधान की विश्लेषणात्मक क्षमता दोनों को उजागर करता है। यह शोध भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) द्वारा वित्त पोषित "पारंपरिक नमक उत्पादन पर सौर ऊर्जा के प्रभाव का अध्ययन: कच्छ के छोटे रण में अगरिया समुदाय का एक केस स्टडी" नामक परियोजना से सामने आया है।

Keywords: Agariya Community, Traditional Salt Production, Audio-Visual Research, Solarization, Documentary Case Study, अगरिया समुदाय, नमक उत्पादन, ऑडियो-विजुअल शोध, सौरकरण, डॉक्यूमेंट्री केस स्टडी

आभारोक्ति: यह शोध भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता से संपन्न किया गया है। हम ICSSR के प्रति इस परियोजना के लिए प्रदान किए गए समर्थन और सहयोग हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

प्रस्तावना

भारत के गुजरात राज्य का कच्छ क्षेत्र स्थित कच्छ के छोटे रण (Little Rann of Kutch) पारंपरिक नमक उत्पादन के लिए विख्यात है। यहाँ का अगरिया समुदाय सदियों से भूमिगत खारे जल के स्रोतों एवं पारंपरिक तकनीकों के माध्यम से नमक बनाने की कठिन, श्रमसाध्य और विशिष्ट जीवनशैली का निर्वहन करता आ रहा है। उनकी सांस्कृतिक धरोहर, श्रम संस्कृति और सामाजिक-सामुदायिक ताने-बाने में यह पेशा गहराई से रचा-बसा है फिर भी, कठोर जलवायु परिस्थितियाँ, मौसम की अनिश्चितता, अस्थिर आय और शारीरिक श्रम पर अत्यधिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ हमेशा उपस्थित रही हैं । ऐसी कई चुनौतियाँ अक्सर सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट का कारण बनती रही हैं, जिससे समुदाय के लिए स्थायी आजीविका बनाए रखना एक जटिल कार्य बन जाता है । इसके अतिरिक्त, एक तरफ प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और संरक्षित क्षेत्र की घोषणा के संदर्भ में अगरिया समुदाय की आजीविका भी जटिलताओं से घिरी हुई है वहीं दूसरी ओर वे रण में स्वच्छ जल और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं Trivedi and Sharma (2023), Bharwada and Mahajan (2008)। नतीजतन, ये पारंपरिक नमक निर्माता अक्सर सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े, लगातार शोषित और प्रशासनिक रूप से उपेक्षित रहते हैं, जिससे उनकी जीवित रहने की लड़ाई और भी कठिन हो जाती है।

यह अध्ययन कच्छ के छोटे रण में पारंपरिक नमक उत्पादन में संलग्न अगरिया समुदाय द्वारा अनुभव किए गए तकनीकी परिवर्तनों और उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का एक सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है । विशेष रूप से, यह शोध सौर ऊर्जा-आधारित पंपों को अपनाने के कारण हुए उत्पादकता और जीवनशैली में गुणात्मक परिवर्तनों पर प्रकाश डालता है, जो पारंपरिक डीजल पंपों से एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह बदलाव न केवल उत्पादन लागत में कमी के माध्यम से आर्थिक स्थिरता लाया है, बल्कि शिक्षा और महिला सशक्तिकरण जैसे सामाजिक संकेतकों में भी उल्लेखनीय सुधार का उत्प्रेरक बना है । यह शोध-पत्र इस परिवर्तनकारी प्रक्रिया को एक डॉक्यूमेंट्री केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत करता है । इस संदर्भ में, दस्तावेजीकरण को केवल एक दृश्य-श्रव्य माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि एक शोध पद्धति के रूप में नियोजित किया गया है Mogalakwe (2006). जो दृश्य नृवंशविज्ञान के माध्यम से समुदाय की बदलती परिस्थितियों को समझने का प्रयास करता है। यह दस्तावेजीकरण मीडिया, दृश्य नृवंशविज्ञान, और सांस्कृतिक अध्ययन के शोधार्थियों को संवेदनशील सामाजिक विषयों पर वृत्तचित्र निर्माण की गहन प्रक्रिया, जिसमें विषय चयन से लेकर कथा-विकास तक शामिल है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं साहित्य समीक्षा

डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण को एक अकादमिक और कथात्मक अभ्यास के रूप में व्यापक रूप से मान्यता मिली है, क्योंकि यह वास्तविकताओं को दर्ज करने, जटिल सामाजिक घटनाओं को व्यक्त करने और हाशिए पर पड़ी समुदायों तथा व्यापक समाज के बीच सेतु बनाने की एक अनोखी क्षमता रखता है। डॉक्यूमेंट्री की मुख्य विशेषता होती है वास्तविक घटनाओं, असली आवाजों और प्रेक्षणात्मक या सहभागितापूर्ण तरीकों का उपयोग, जो प्रचलित धारणाओं को चुनौती देते हैं और सामाजिक बदलावों पर नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। साक्षात्कार, पुरालेखीय दृश्य (आर्काइव फुटेज), वॉइस ओवर नैरेशन और वास्तविक समय के प्रेक्षण जैसी प्रोडक्शन तकनीकें विशेष रूप से ग्रामीण या कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों को चित्रित करने में प्रभावी रही हैं Borish et al. (2021) । यह दृष्टिकोण हाशिए पर खड़े समुदायों के अनुभवों को सामने लाने और सामाजिक न्याय की वकालत करने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण को एक अकादमिक और कथात्मक अभ्यास के रूप में व्यापक रूप से मान्यता मिली है, क्योंकि यह वास्तविकताओं को दर्ज करने, जटिल सामाजिक घटनाओं को व्यक्त करने और हाशिए पर पड़े समुदायों तथा व्यापक समाज के बीच सेतु बनाने की एक अनोखी क्षमता रखता है Pathak (2024) । इसके अतिरिक्त, वृत्तचित्र फिल्म को गुणात्मक शोध के लिए एक उपकरण के रूप में तेजी से मान्यता मिल रही है, जो विविध समूहों के साथ अवधारणा और सहयोग को सुगम बनाता है, और गहरी डेटा संग्रह के लिए फिल्माए गए साक्षात्कारों की शक्ति का उपयोग करता है ।

विजुअल एथ्नोग्राफी (दृश्य नृवंशविज्ञान)के अध्ययनों ने डॉक्यूमेंट्री फिल्म को मानवविज्ञान और मीडिया अध्ययन में एक महत्वपूर्ण शोध पद्धति के रूप में रेखांकित किया है। यह सांस्कृतिक परंपराओं, श्रम प्रक्रियाओं और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को गहराई से दर्शाने में मदद करता है। इस विधा में मल्टीमीडिया नैरेटिव और सहयोगी फील्डवर्क के जरिए समुदायों को समझने का एक अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण विकसित किया जाता है, जिसमें कहानी कहने और स्थानीय लोगों के साथ सहनिर्माण पर बल दिया जाता है Omrani (2023), Reeves et al. (2013)

गुजरात के लिटिल रण ऑफ कच्छ में नमक मजदूरों पर हुए शोध ने अगरिया समुदाय के श्रम और संस्कृति की ऐतिहासिक व सामाजिक अहमियत को सामने लाया है। कठोर जलवायु, आर्थिक अस्थिरता और पर्यावरणीय जोखिमों से जूझते इस समुदाय के जीवन को पत्रकारिता और कुछ सीमित डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में दर्ज किया गया है।

सांस्कृतिक अध्ययन के सिद्धांत बताते हैं कि कैसे तकनीकी अनुकूलन ग्रामीण समाजों की भौतिक और अमूर्त, दोनों तरह की संस्कृति को बदल देता है । मीडिया, विशेष रूप से डॉक्यूमेंट्री फिल्में, सामाजिक बदलावों को दर्ज करने और समुदायों को अपनी बदलती पहचान और अनुभव साझा करने का माध्यम बन जाती हैं। हालिया साहित्य में सहभागितापूर्ण वीडियो और आत्मपरावर्तक (reflexive) डॉक्यूमेंट्री रूपों पर विशेष ध्यान दिया गया है, जहाँ हाशिए पर मौजूद लोग केवल विषय नहीं बल्कि सहनिर्माता बनते हैं, जिससे प्रतिनिधित्व अधिक जिम्मेदार और गहन बनता है।

हालांकि भारत में नमक उत्पादन और सामुदायिक परिवर्तनों पर कुछ डॉक्यूमेंट्री बनाई गई हैं, लेकिन फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को स्वयं एक केस स्टडी या शोध पद्धति के रूप में बहुत कम अकादमिक कार्यों में विश्लेषित किया गया है। सामाजिक रूप से संवेदनशील विषयों पर डॉक्यूमेंट्री बनाने में विषय चयन, पहुँच, कथानिर्माण, तकनीकी निर्णयों और सामुदायिक सहभागिता जैसे कई पहलुओं पर सावधानीपूर्वक निर्णय लेने पड़ते हैं। साहित्य इस बात पर जोर देता है कि इन फिल्मों में कलात्मक गुणवत्ता, नैतिक जिम्मेदारी और शोध की प्रामाणिकता का संतुलन होना चाहिए ताकि वे समाज में सार्थक प्रभाव डाल सकें। यह शोध पत्र इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है, जहां वृत्तचित्र निर्माण की पद्धति को न केवल अंतिम उत्पाद के रूप में बल्कि एक अनुसंधान उपकरण के रूप में भी जांचा जाता है, जो अगरिया समुदाय के अनुभवों की गहराई से पड़ताल करता है। इस प्रकार, यह दस्तावेजीकरण एक संवेदनशील सामाजिक विषय पर गुणात्मक डेटा संग्रह और विश्लेषण के लिए दृश्य माध्यमों के उपयोग को एक सशक्त शोध रणनीति के रूप में प्रस्तुत करता है Borish et al. (2021), Ferrari (2020)।

यह शोध डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण को एक पद्धतिगत (methodological) उपकरण और हाशिए पर बसे समुदायों में सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक (catalyst) - दोनों रूपों में स्थापित करता है। एक्टिविस्ट डॉक्यूमेंट्री के सिद्धांतों Aguayo (2019) पर आधारित यह ढाँचा डॉक्यूमेंट्री को एक वकृत्वात्मक (rhetorical) और सहभागितापूर्ण (participatory) अभ्यास के रूप में देखता है, जो केवल प्रतिनिधित्व से आगे बढ़कर वास्तविक भौतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन को संभव बनाता है।

एक्टिविस्ट मीडिया सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि डॉक्यूमेंट्री फिल्में सार्वजनिक मत को प्रभावित करने, नीतिगत हस्तक्षेप को प्रोत्साहित करने और सामुदायिक एजेंसी (community agency) को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। “Participatory publics” की अवधारणा यह दर्शाती है कि कैसे फिल्मकार और समुदाय मिलकर ऐसे नैरेटिव गढ़ते हैं जो सांस्कृतिक और आर्थिक न्याय को बढ़ावा देते हैं।

शोध का उद्देश्य

डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रत्येक अवस्था - विषय चयन, फील्ड रिसर्च, समुदाय से जुड़ाव, कथा विकास, विषयों (participants) के साथ सहनिर्माण, फिल्मांकन और संपादन का विश्लेषण करना ।

कार्यप्रणाली

हमने अगरिया समुदाय के साथ मिलकर कार्य किया, जिससे उनकी विशिष्ट परिस्थितियों और सांस्कृतिक संदर्भों की गहन समझ विकसित हो सके। यह शोध दृश्य नृवंशविज्ञान (Visual Ethnography) टपेनंस म्जीदवहतंचीलद्ध पर आधारित गुणात्मक (Qualitative) फनंसपजंजपअमद्ध पद्धति अपनाता है, जिसके माध्यम से डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रत्येक प्रमुख अवस्था-विषय चयन, फील्ड रिसर्च, समुदाय से जुड़ाव, कहानी का विकास, प्रतिभागियों के साथ सह-निर्माण, फिल्मांकन और संपादन का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण किया जाता है।

शोध की शुरुआत साहित्य समीक्षा और विशेषज्ञ परामर्श के जरिए एक सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषय की पहचान से होती है, ताकि डॉक्यूमेंट्री का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ स्पष्ट और सार्थक हो। इसके बाद गहन फील्डवर्क के माध्यम से प्राथमिक डेटा एकत्र किया जाता है, जिसमें प्रत्यक्ष अवलोकन, अर्धसंरचित साक्षात्कार और पुरालेखीय शोध (archival research) शामिल हैं । इस प्रक्रिया में अगरिया समुदाय के साथ भरोसेमंद संबंध बनाते हुए सार्थक सहयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

कथानक का विकास समुदाय के साथ मिलकर किया जाता है, जिसमें उनकी दृष्टिकोण और अनुभवों को स्क्रिप्ट में शामिल किया जाता है। सहनिर्माण की प्रक्रिया में समुदाय के सदस्य सक्रिय रूप से स्क्रिप्ट लेखन, योजना निर्माण और समय समय पर समीक्षा में भाग लेते हैं, जिससे उनकी एजेंसी और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। फिल्मांकन बिना बाधा डाले (unobtrusive techniques) किया जाता है, जिसमें नैतिक दस्तावेजीकरण और तकनीकी मानकों पर विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि प्रतिभागी सहज महसूस करें और प्रस्तुति प्रामाणिक बनी रहे।

विषय चयन और शोध की नींव

इस अध्ययन के लिए अगरिया समुदाय के पारंपरिक नमक उत्पादन में सौर ऊर्जा अपनाने की प्रक्रिया को केंद्रीय विषय के रूप में चुना गया। यह निर्णय तीन परस्पर जुड़ी प्रक्रियाओं से निकला रू

- **साहित्य समीक्षा (Literature Review)**

मौजूदा शैक्षणिक लेख, रिपोर्टें और मीडिया लेखों का अध्ययन किया गया ताकि समझा जा सके कि ऊर्जा संक्रमण और समुदाय के सांस्कृतिक परिवर्तन पर अब तक क्या काम हुआ है, और कौन से क्षेत्र शोध से वंचित हैं।

- **प्रारंभिक क्षेत्रीय यात्राएँ (Preliminary Site Visits)**

गुजरात के लिटिल रण ऑफ कच्छ या छोटा रण क्षेत्र में कई दौरे किए गए। इन यात्राओं में शोधकर्ताओं ने नमक उत्पादन स्थलों का निरीक्षण किया, स्थानीय परिदृश्य को समझा और समुदाय के दैनिक जीवन का हिस्सा बन कर प्रारंभिक अवलोकन किए।

- **विशेषज्ञ परामर्श (Expert Consultations)**

स्थानीय NGO कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और समुदाय के वरिष्ठ सदस्यों से चर्चा कर उन सामाजिक-सांस्कृतिक बिंदुओं की पहचान की गई जिन पर डॉक्यूमेंट्री को केंद्रित किया जाना चाहिए।

इस चरण के दौरान लिए गए फील्ड नोट्स, स्थानिक मानचित्र (Location maps), और पर्यावरणीय स्कोपिंग ने तीन प्रमुख थीमों को स्पष्ट किया- 1) ऊर्जा संक्रमण, 2) सांस्कृतिक दृढ़ता, और 3) श्रम व्यवस्था में परिवर्तन।

चित्र 1

चित्र 1 फिल्ड नोट्स एकत्रित करते हुए (**अगरिया हित रक्षक समिति**, **पाटडी**)

चित्र 2

चित्र 2 स्क्रिप्ट संवरचना एवं समीक्षा (**अगरिया हित रक्षक समिति**, **पाटडी**)

- **फील्डवर्क और समुदाय से जुड़ाव (Fieldwork and Community Engagement)**

फील्डवर्क चरण का मुख्य उद्देश्य था अगरिया समुदाय के साथ गहरा विश्वास (rapport)और सहयोगात्मक संबंध विकसित करना । शोधकर्ता समुदाय के बीच कई सप्ताहों तक रहे, नमक के खेतों में श्रम प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा और अनौपचारिक वार्तालापों व साक्षात्कारों के माध्यम से अनुभव एकत्र किए।

समुदाय से जुड़ाव के लिए निम्न रणनीतियाँ अपनाई गई:

1) सामुदायिक बैठकों में भाग लेकर शोध के उद्देश्यों और प्रक्रियाओं को पारदर्शी रूप से साझा करना।
2) परिवारों के साथ भोजन और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेकर औपचारिकता की दीवारें तोड़ना।
3) सहभागितापूर्ण सहमति (participatory consent) की प्रक्रिया के ज़रिए प्रत्येक व्यक्ति को निर्णय में शामिल करना।

4) लगातार बैठकों से संबंधों को मजबूत बनाए रखना।

चित्र 3

चित्र 3 प्रतिभागी अगरिया से वार्तालाप

चित्र 4

चित्र 4 अगरिया परिवार के साथ भोजन

- **कहानी का विकास और प्रतिभागियों की भागीदारी (Narrative Development and Participant Involvement)**

कहानी की संरचना (narrative structure) को समुदाय के साथ मिलकर सह निर्मित (co-created) किया गया । यह प्रक्रिया केवल शोधकर्ताओं द्वारा तय नहीं की गई, बल्कि समुदाय की आवाज और अनुभवों को केंद्र में रखते हुए की गई।

1) **स्टोरी सत्र:** रू स्थानीय लोगों के साथ बैठकर फिल्म की रूपरेखा तय की गई ।
2) **स्क्रिप्ट पर संवाद:** प्रतिभागियों को स्क्रिप्ट के मसौदे दिखाए गए और उनके सुझावों के अनुसार संशोधन किए गए।
3) **फीडबैक राउंड्स:** कहानी के मुख्य घटनाक्रम, भाषा और दृष्टिकोण पर समुदाय से दोहराए गए सुझाव लिए गए।
4) **सूचित सहमति (Informed Consent):** सभी प्रतिभागियों से स्पष्ट अनुमति प्राप्त की गई ताकि उनकी आवाज और छवि का जिम्मेदार उपयोग हो सके।
5) फिल्मांकन और स्थल पर तकनीकी निर्णय (Filming and On-location Technical Decisions)

फिल्मांकन चरण में तकनीकी गुणवत्ता और नैतिक दस्तावेजीकरण के बीच संतुलन बनाए रखना सबसे अहम था। कैमरा टीम ने लोकेशन पर नदवइजतनेपअम तकनीकें अपनाईं ताकि प्राकृतिक माहौल और प्रतिभागियों की सहजता बनी रहे।

1) कैमरा एंगल्स को इस तरह चुना गया कि दृश्य वास्तविक और हस्तक्षेप मुक्त रहें।
2) प्राकृतिक प्रकाश और परिवेशी ध्वनि को प्राथमिकता दी गई।
3) ग्रामीण परिवेश की तकनीकी चुनौतियों जैसे बिजली की कमी, धूल, तेज धूप का समाधान रचनात्मक तरीकों से किया गया।

4) फिल्मांकन के दौरान समुदाय की सहमति हर चरण में सुनिश्चित की गई।

इस दौरान लिए गए प्रोडक्शन चित्र में नमक के खेतों में कैमरा सेटअप, साक्षात्कारों के दृश्य, और रोजमर्रा के क्षण दिखते हैं, जो इस डॉक्यूमेंट्री की यथार्थपरक सौंदर्य दृष्टि को दर्शाते हैं।

चित्र 5

चित्र 5 लोकेशन पर कैमरा सेटअप और साक्षात्कार के दृश्य।

चित्र 6

चित्र 6 अगरिया परिवार के साथ फिल्म निर्देशक एवं कर्मीदल

निष्कर्ष (CONCLUSION)

डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रक्रिया केवल एक तकनीकी या कलात्मक अभ्यास नहीं, बल्कि एक गहन सामाजिक शोध और सहभागितापूर्ण ज्ञान निर्माण का माध्यम है। दृश्य नृवंशविज्ञान (Visual Ethnography) और सहभागितापूर्ण डॉक्यूमेंट्री प्रथाओं (Participatory Documentary Practices) पर आधारित इस दृष्टिकोण ने न केवल समुदाय के जीवन, श्रम और संस्कृति को दर्ज किया, बल्कि उन्हें कथा के निर्माण में सक्रिय रूप से शामिल भी किया।

शुरुआती चरण में विषय चयन और शोध की नींव तैयार करने से लेकर फील्डवर्क में समुदाय के साथ विश्वासपूर्ण संबंध बनाने तक, हर कदम पर संदर्भ की प्रासंगिकता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को प्राथमिकता दी गई। साहित्य समीक्षा, क्षेत्रीय यात्राओं और विशेषज्ञ परामर्श के संयोजन ने एक ऐसे विषय की पहचान करने में मदद की जो न केवल तकनीकी बदलाव (सौर ऊर्जा का उपयोग) से जुड़ा था, बल्कि उसमें गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आयाम भी निहित थे।

फील्डवर्क और समुदाय से जुड़ाव के दौरान अपनाई गई विधियाँ जैसे अनौपचारिक संवाद, साझा अनुभव, सहभागितापूर्ण सहमति और दीर्घकालिक उपस्थिति ने शोध को 'बाहरी अवलोकन' से आगे बढ़ाकर 'साझा अनुभव' में परिवर्तित कर दिया। इस प्रक्रिया में डॉक्यूमेंट्री टीम और समुदाय के बीच जो भरोसा बना, उसने आगे के सभी चरणों जैसे कथा विकास, सह-निर्माण, फिल्मांकन और संपादन को अधिक गहरा और स्पष्ट बना दिया।

कहानी का विकास और स्क्रिप्टिंग किसी एकपक्षीय दृष्टिकोण पर आधारित न होकर समुदाय की आवाज, दृष्टि और अनुभवों पर आधारित थी। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि डॉक्यूमेंट्री मात्र एक “विषय पर बनाई गई फिल्म”” नहीं रही, बल्कि एक ऐसी सह-निर्मित सांस्कृतिक दस्तावेज बनी जिसमें समुदाय स्वयं अपनी कहानी कहने वाला सक्रिय एजेंट है।

फिल्मांकन के दौरान अपनाई गई unobtrusive तकनीक और नैतिक मानदंडों ने दृश्य सौंदर्य और सहभागितापूर्ण ईमानदारी के बीच एक संतुलन बनाया। वहीं, संपादन की प्रक्रिया में प्रतिभागियों को शामिल करना, फीडबैक लेना और उनके सुझावों के अनुसार कथा क्रम में संशोधन करना इस दृष्टिकोण की पारदर्शिता और जवाबदेही को रेखांकित करता है।

इस पूरी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा आत्म-परावर्तन (reflexivity) यानी शोधकर्ता और फिल्मकार की अपनी स्थिति के अनुसार और चित्र निर्णयों का आलोचनात्मक मूल्यांकन। फील्ड नोट्स, रिफ्लेक्टिव मेमो और समीक्षा बैठकों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि तकनीकी, नैरेटिव और नैतिक निर्णय समुदाय के अनुभवों के प्रति उत्तरदायी रहें।

इस प्रकार, यह पद्धतिगत रूपरेखा तीन स्तरों पर काम करती है।

1) **शोधात्मक स्तर पर:** यह सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को दर्ज और विश्लेषित करने का एक सशक्त तरीका है।
2) **सांस्कृतिक स्तर पर:** यह समुदायों को अपनी कहानी कहने का अधिकार और एजेंसी प्रदान करता है।
3) **मीडिया निर्माण के स्तर पर:** यह डॉक्यूमेंट्री को केवल प्रस्तुति नहीं बल्कि संवाद, प्रतिनिधित्व और परिवर्तन का उपकरण बन जाती है ।

डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रक्रिया यह दर्शाती है कि जब शोध, दृश्य विधियाँ और समुदाय की भागीदारी को एक साथ लाया जाता है, तो परिणामस्वरूप एक ऐसी ज्ञान-निर्माण प्रक्रिया विकसित होती है जो अधिक गहरी, जिम्मेदार, और सामाजिक रूप से सार्थक होती है। यह दृष्टिकोण न केवल अगरिया समुदाय के सौर परिवर्तन की कहानी को दस्तावेजित करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि दृश्य माध्यम किस प्रकार सामाजिक अनुसंधान और सांस्कृतिक सशक्तिकरण के बीच एक सेतु का कार्य कर सकता है।

REFERENCES

Aguayo, A. J. (2019). Introduction. In Documentary Cinema in Chile, 1957–2017 (1–24). Oxford University Press. https://doi.org/10.1093/oso/9780190676216.003.0001

Bharwada, C., and Mahajan, V. (2008). Yet to be Freed: Agariyas' Lives and Struggle for Survival in the Little Rann of Kutch [Report].

Borish, D., Cunsolo, A., Mauro, I., Dewey, C., and Harper, S. L. (2021). Moving Images, Moving Methods: Advancing Documentary Film for Qualitative Research. International Journal of Qualitative Methods, 20, 1–10. https://doi.org/10.1177/16094069211013646

Ferrari, E. P. (2020). Transforming Earth into Houses: A Methodology for Documenting Construction Processes as an Apprentice in the Iranian Desert, South Khorasan. The International Archives of the Photogrammetry, Remote Sensing and Spatial Information Sciences, XLIV-M-1, 953–960. https://doi.org/10.5194/isprs-archives-XLIV-M-1-2020-953-2020

Mogalakwe, M. (2006). The Use of Documentary Research Methods in Social Research. African Sociological Review, 10(1), 221–230.

Omrani, A. (2023). Critical Review of Visual Anthropology. Visual Review: International Visual Culture Review, 13(1), 105–119. https://doi.org/10.37467/revvisual.v13.3382

Pathak, R. K. (2024). Film and Social Change: Exploring the Impact of Documentaries on Activism. Universal Research Reports, 11(1), 89–96. https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.13

Reeves, S., Peller, J., Goldman, J., and Kitto, S. (2013). Ethnography in Qualitative Educational Research: AMEE Guide No. 80. Medical Teacher, 35(8), e1365–e1379. https://doi.org/10.3109/0142159X.2013.804977

Trivedi, M., and Sharma, B. (2023). Marginalization of the Meal Makers: Ethnographic Observations of Salt Farmers and Workers of the Little Rann of Kutchh in India. Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.7659901